शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मिशन प्रेरणा
Language and Learning foundation
Strong Foundation, Stronger Future

सहज-2

कक्षा-2

नि:शुल्क वितरण हेतु
सत्र 2020-2021

मुझे पढ़ना पसन्द है।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

सहज-2

कक्षा-2

संरक्षण	:	**श्रीमती रेणुका कुमार, आई.ए.एस** अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा) उ.प्र. शासन, लखनऊ
निर्देशन		**श्री विजय किरन आनन्द, आई.ए.एस** महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.
संकल्पना एवं मार्गदर्शन	:	**श्री सत्येन्द्र कुमार, आई.ए.एस.** अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र. **डा० सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ
समन्वयन	:	**श्री आनन्द कुमार पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता, समग्र शिक्षा **श्रीमती शिखा शुक्ला,** विशेषज्ञ, गुणवत्ता, समग्र शिक्षा **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता शिक्षा, समग्र शिक्षा
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ **श्रीमती दीपा तिवारी,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
समीक्षा एवं संपादन	:	**श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता शिक्षा, समग्र शिक्षा **श्री रमेश चंद्र,** लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली
लेखन मंडल	:	डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली)
ले—आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन	:	प्रेमचन्द सैनी (ग्राफिक डिजाईनर), जयपुर, राजस्थान
चित्रांकन	:	सुशांता दास, हीरा धुर्वे, पूजा साहू, सुबिनिता देशप्रभु, निलेश गहलोत, हबीब अली

अन्तः पृष्ठ के कागज का विशिष्टीकरणः प्रयुक्त कागज मिल **के.आर पल्प एण्ड पेपर्स लि०/सेन्चुरी पल्प एण्ड पेपर** वर्जिन पल्प युक्त कागज बैम्बू अथवा वुड बेस्ड (Bamboo or wood based) के अतिरिक्त अन्य एग्रो बेस्ड (Agro based) अर्थात बगाज पर आधारित एवं क्रीम लेड एण्ड क्रीमवोब पेपर 70 जी.एस.एम. भार तथा आकार 50.8 सेमी.x 76.2 सेमी. का है। कागज की ब्राइटनेस न्यूनतम 80 प्रतिशत, वन मिनट कॉब टेस्ट की अधिकतम औसत 22, ब्रेकिंग लेन्थ क्रॉस डायरेक्शन 1700, मशीन डायरेक्शन 2500, ओपेसिटी न्यूनतम—85 प्रतिशत एवं रजिस्टेन्ट टू फेदरिंग—टू पास द टेस्ट, टियर इन्डेक्स सी0डी0 4.0 एवं एम0 डी0 3.5 है। प्रयुक्त होने वाला कागज में अन्य विशिष्टियाँ बी0 आई0 एस0 कोड—1848 (चौथा पुनरीक्षण) के अनुसार हैं।

पुस्तकों में प्रिण्ट साइजः 15.9 सेमी. x 22.1 सेमी, ट्रिम साइजः 18.41 सेमी x 24.13 सेमी. है।

प्रकाशक	:	**अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा**
मुद्रक	:	**नवज्योति प्रेस, पंचवटी, मथुरा**
मुद्रित प्रतियों की संख्या	:	**1,98,602**

उत्पादन : पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0।

© उत्तर प्रदेश शासन।

आभारः इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

विषय सूची

कविता		1
पाठ–1	साइकिल	2
पाठ–2	कौए की भूख	4
पाठ–3	माही और सुरेश	6
पाठ–4	बंदर का चश्मा	8
पाठ–5	मेंढकी और चिड़िया	10
पाठ–6	मोनू बछड़ा	12
पाठ–7	चीकू और मीकू	14
पाठ–8	जादुई बीज	16
पाठ–9	बरसात का मौसम	18
पाठ–10	गुड़िया की बिल्ली	20
पाठ–11	दशहरा का मेला	22
पाठ–12	बबलू हाथी	24
पाठ–13	चिड़िया के बच्चे	26
पाठ–14	भूरा की गेंद	28
पाठ–15	कोयल का घोंसला	30
पाठ–16	मोर	32
बताओ, मैं कौन?		34

कविता

छुन-छुन, छुन-छुन
तेल में नाची,
प्लेट में आ
शरमाई पकौड़ी।

दौड़ी-दौड़ी
आई पकौड़ी।

हाथ से उछली
मुँह में पहुँची,
पेट में जा
घबराई पकौड़ी।

दौड़ी-दौड़ी
आई पकौड़ी।

मेरे मन को
भाई पकौड़ी।

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

शिक्षक के लिए – शिक्षक कविता बच्चों को पढ़कर सुनाएँ और उनके साथ मिलकर गाएँ।

साइकिल

पापा ने रमन के लिए साइकिल खरीदी। रमन साइकिल चलाना सीखने लगा। एक दिन रमन साइकिल चला रहा था। सड़क पर एक कुत्ता सोया हुआ था।

रमन कुत्ते को नहीं देख पाया। उसकी साइकिल कुत्ते से टकरा गई। कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा। रमन डर गया। वह साइकिल छोड़कर वहाँ से भाग गया।

पाठ–2

कौए की भूख

कौए को भूख लगी। वह एक आम के पेड़ पर जा बैठा। पेड़ पर आम लगे हुए थे। उस पेड़ पर एक पीला गुब्बारा भी अटका हुआ था। कौए को यह गुब्बारा एक मोटे आम जैसा लगा।

गुब्बारे को देखकर कौए की भूख और बढ़ गई। वह गुब्बारे के पास गया। जैसे ही उसने खाने के लिए गुब्बारे में चोंच मारी वह फूट गया- फटाक....। कौआ डर कर उड़ गया।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

Sahaj- 2 Farma-2 A

पाठ-3

माही और सुरेश की पतंग

माही और सुरेश दोस्त थे। एक दिन दोनों पतंग उड़ा रहे थे। दोनों की पतंगे आसमान में बहुत ऊँचाई तक उड़ रहीं थीं। तभी तेज आँधी आ गई। आसमान से सर्र-सर्र की तेज आवाज़ें आने लगीं।

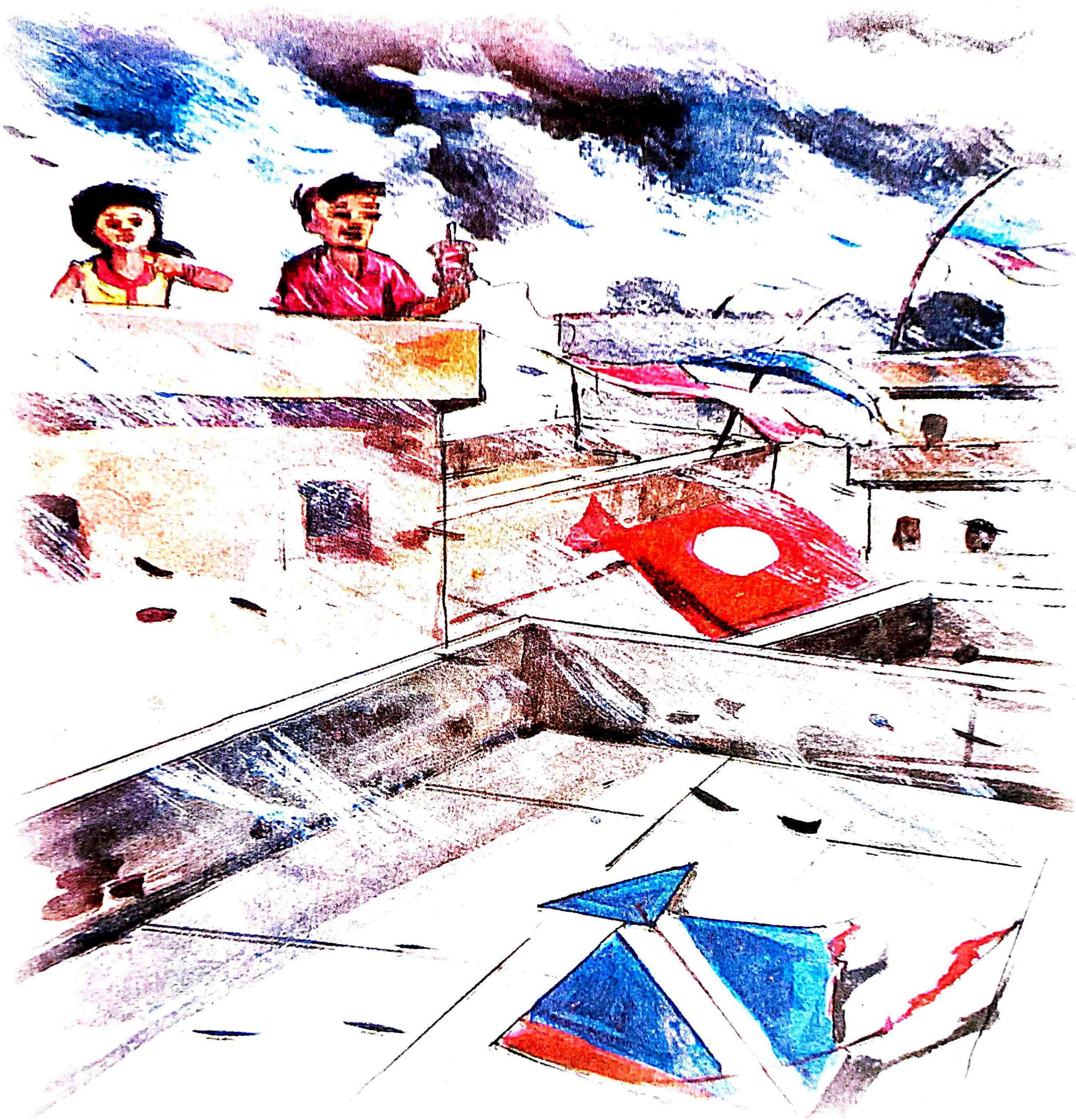

दोनों की पतंगे कभी दाएं कभी बाएं भाग रही थीं। धूल की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पतंगे फर फराते–फराते आपस में फँस गई। दोनों की पतंगे फटकर जमीन पर गिर गईं।

पाठ–4

बंदर का चश्मा

एक बंदर खाने की तलाश में मकान की छत पर चढ़ा। वहाँ उसे एक चश्मा मिला। चश्मा पहन कर बंदर को सब उल्टा दिखने लगा। बंदर बोला– ''अरे! यह क्या? आसमान नीचे और जमीन ऊपर।'' बादलों को नीचे देखकर बंदर को बहुत मजा आया।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

वह छत से बादल पकड़ने के लिए नीचे कूदा और गिरा, धड़ाम....। बंदर का चश्मा भी टूटा, चटाक...। अब बंदर को न बादल दिखे, न आसमान।

पाठ–5

मेंढकी और चिड़िया

एक थी मेंढकी और एक थी चिड़िया। वह दोनों घूमने निकली। उन्हें एक कुआँ मिला। चिड़िया तो फुर्र से उड़ गई। मेंढकी कुएँ में गिर गई। चिड़िया कहने लगी– ''कैसी रही?'' मेंढकी बोली– ''मुझे मजा आ रहा है। मैं तो नहा रही हूँ।''

मेंढकी और चिड़िया

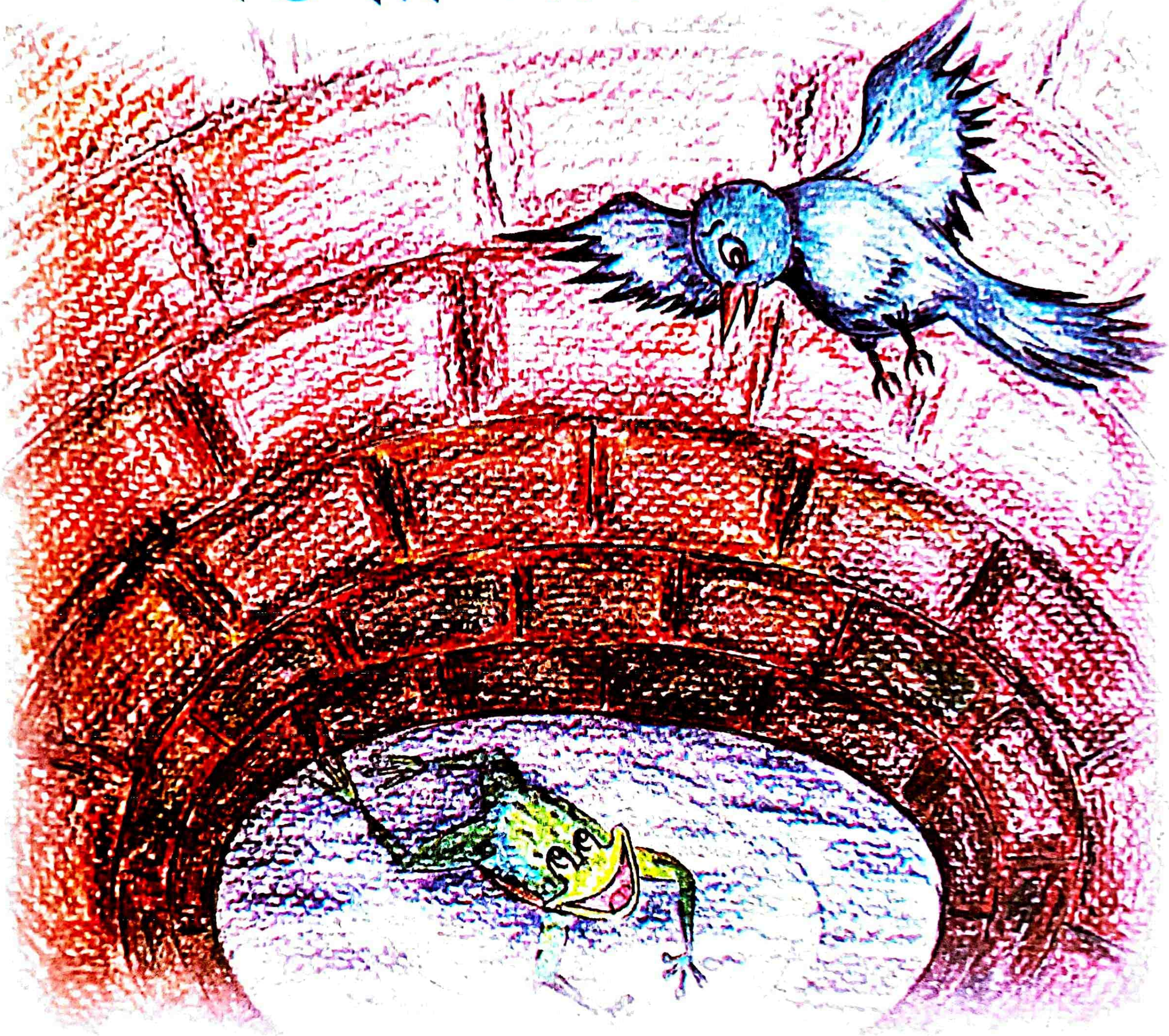

एक थी मेंढकी और एक थी चिड़िया। वह दोनों घूमने निकली। उन्हें एक कुआँ मिला। चिड़िया तो फुर्र से उड़ गई। मेंढकी कुएँ में गिर गई। चिड़िया कहने लगी- ''कैसी रही?'' मेंढकी बोली- ''मुझे मजा आ रहा है। मैं तो नहा रही हूँ।''

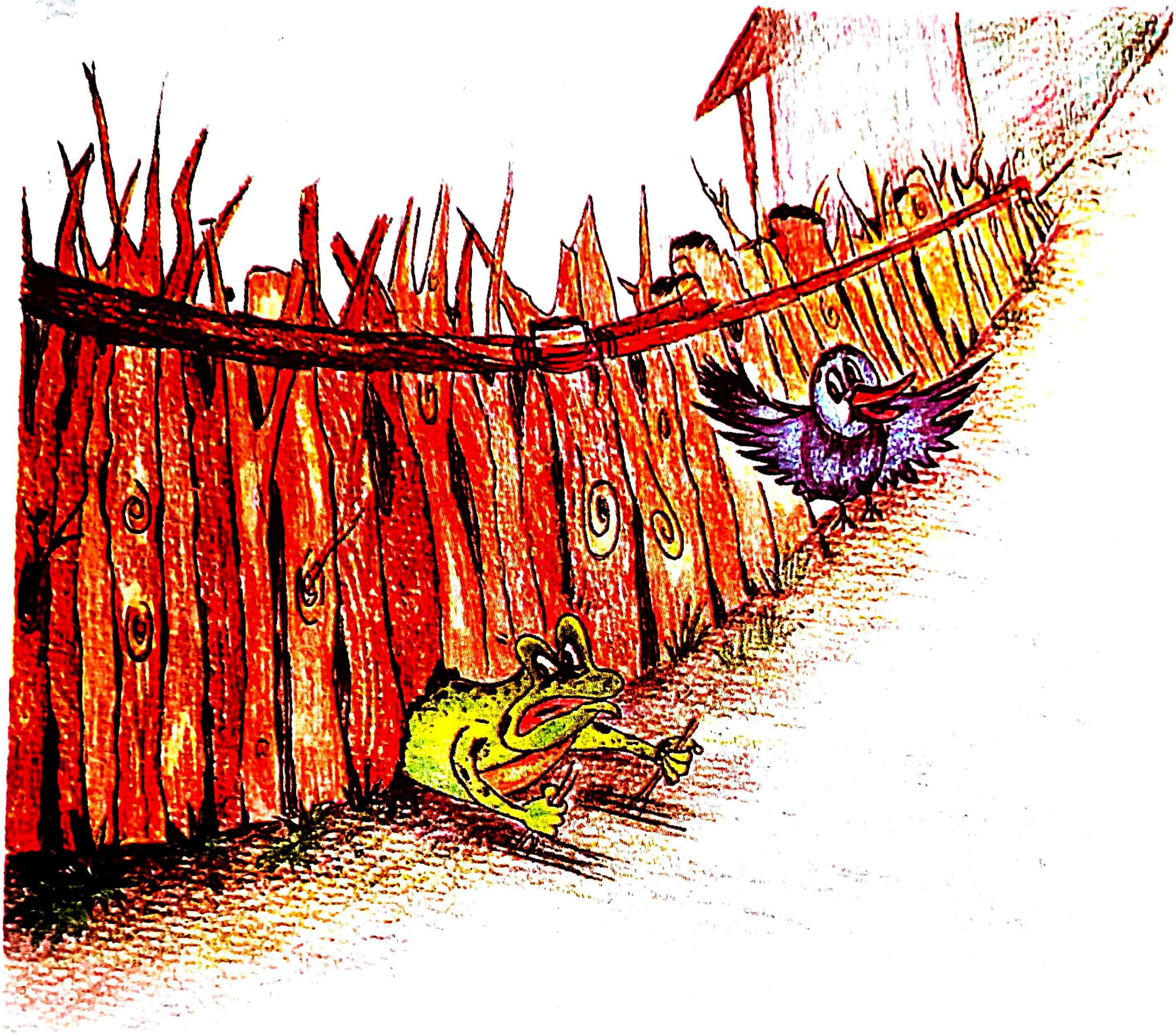

फिर दोनों आगे चलती गईं। आगे उन्हें बाढ़ मिली। चिड़िया फुर्र से उड़ गई। मेंढकी बाढ़ में फँस गई। चिड़िया कहने लगी ''कैसी रही?'' मेंढकी बोली- ''मुझे मजा आ रहा है। मैं तो पीठ खुजला रही हूँ।''

पाठ-6

मोनू बछड़ा

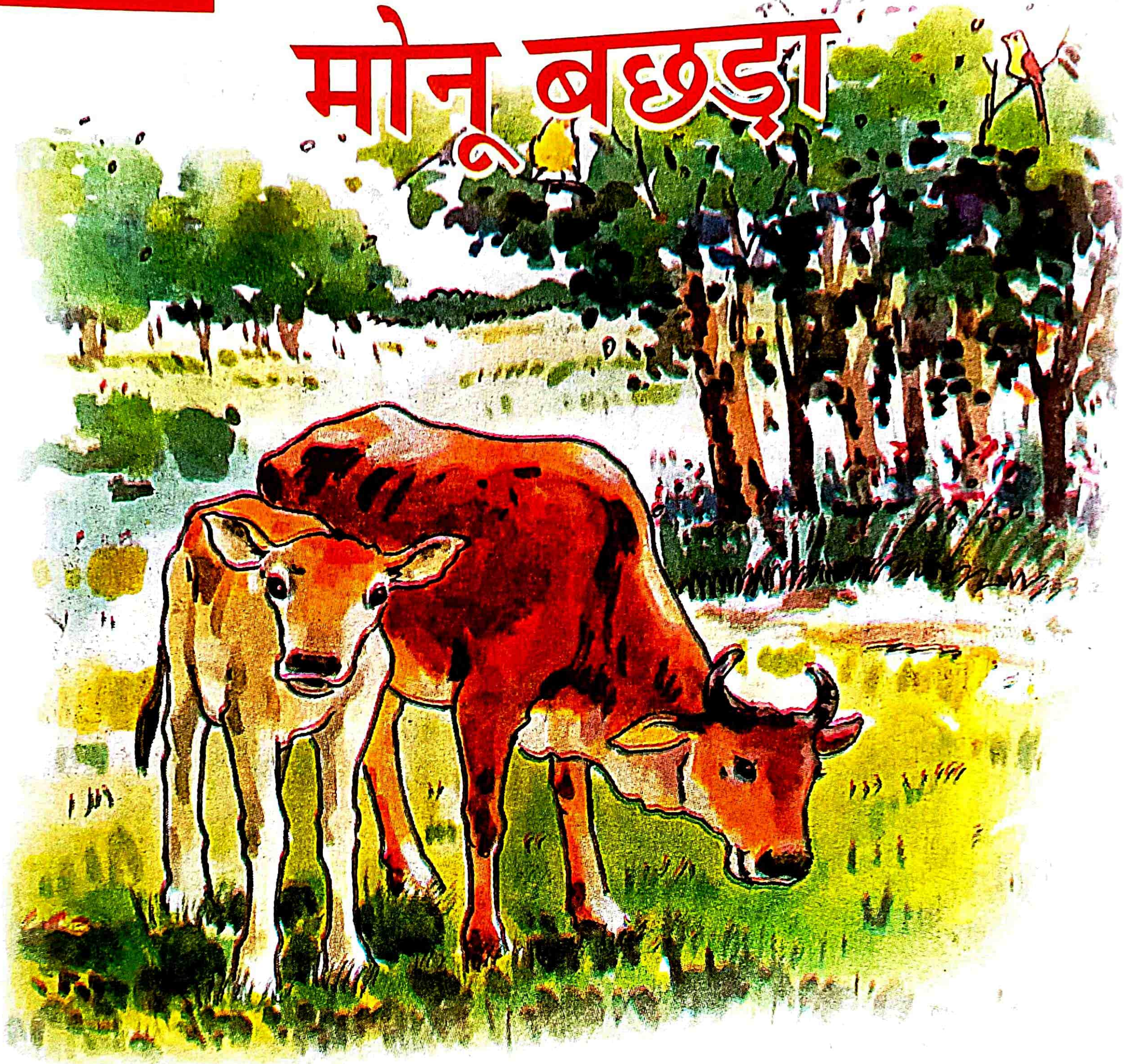

मोनू बछड़ा रोज अपनी माँ के साथ घास चरने जाता। उसे पक्षियों की आवाज़ सुनना बहुत पसंद था। वह हमेशा उन आवाज़ों का पीछा करता। एक दिन पक्षियों की आवाज़ का पीछा करते-करते वह खो गया। वह वापस जाने का रास्ता भूल चुका था।

उसे माँ की याद आने लगी। उसने एक कोयल की आवाज़ सुनी। कोयल ने उससे कहा– ''तुम मेरी आवाज़ का पीछा करो।'' मोनू कोयल की आवाज़ का पीछा करने लगा। पीछा करते–करते वह अपनी माँ के पास पहुँच गया।

पाठ–7

चीकू और मीकू

चीकू और मीकू गिलहरी साथ में रहती थीं। चीकू, मीकू का सारा खाना खा जाती थी। इसलिए मीकू बहुत परेशान रहती थी। चीकू खाना खा–खाकर बहुत मोटी हो गई। वह इतनी मोटी हो गई कि उससे चला भी नहीं जाता था।

एक दिन चीकू को जोर से भूख लगी। वह चूहे के बिल में खाना ढूंढने गई और फँस गई। मीकू दौड़ कर गई और चीकू को खींचकर बाहर निकाला। तब से उनकी दोस्ती गहरी हो गई। अब वह मिलकर खाना खाने लगीं।

पाठ–8

जादुई बीज

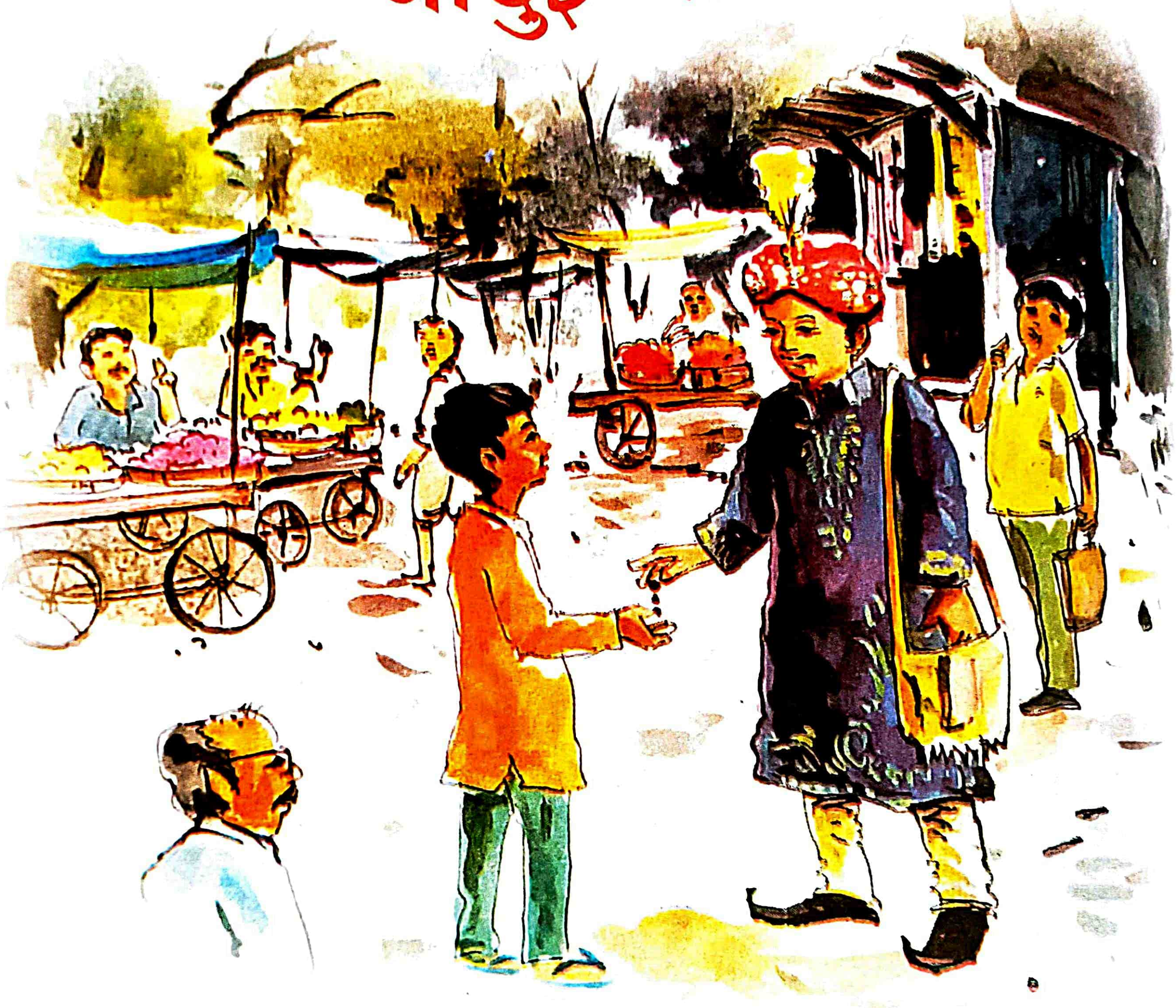

माँ ने राशिद को सेब लेने भेजा। रास्ते में एक लड़का जादुई बीज बेच रहा था। उसने राशिद से कहा– ''तुम जो भी फल चाहो इन बीजों से तुम ले सकते हो।'' राशिद ने उससे वो बीज खरीद लिए।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

वापस आने पर माँ ने उससे पूछा– ''यह क्या लाए हो ?'' राशिद ने जैसे ही हाथ आगे किया, माँ ने गुस्से से कहा– ''इससे कौन से फल उग आएंगे।'' यह कहकर माँ ने बीज बाहर फैंक दिए। देखते ही देखते वहाँ सेबों से लदा एक पेड़ उग गया। राशिद और माँ दोनों हैरान रह गए।

पाठ–9

बरसात का मौसम

बरसात का मौसम था। गली के बच्चे सोनू के घर खेल रहे थे। तभी बरसात भी शुरू हो गई। बच्चों ने खेलना बंद कर दिया और बच्चे बाहर आकर बरसात के पानी में खेलने लगे। उन्हें मजा आ रहा था। सोनू का कुत्ता भी उनके साथ खेल रहा था।

तभी सबको टर्र-टर्र की आवाज सुनाई दी। कुत्ता टर्र-टर्र की आवाज से चौंक गया। उसने दो मेंढक देखे। वह उनको पकड़ने के लिए दौड़ा। कुत्ते को देखकर मेंढकों ने पानी में छलांग लगा दी। बच्चों को यह देखकर बड़ा मजा आया।

पाठ-10

गुड़िया की बिल्ली

गुड़िया के घर में एक बिल्ली रहती थी। वह बहुत शैतान थी। एक दिन बिल्ली चुपके से सारा दूध पी गई। माँ बोली–''हाय रे! बिल्ली सारा दूध पी गई।'' गुड़िया बोली– ''हाँ तो क्या हुआ? दूध ही तो है।'' एक दिन बिल्ली ने गुड़िया के भाई की किताब फाड़ दी।

भाई बोला– ''हाय रे! बिल्ली ने मेरी किताब फाड़ दी।'' गुड़िया बोली– ''तो क्या हुआ? किताब ही तो है।'' तब एक दिन बिल्ली ने गुड़िया की गुड़िया तोड़ दी। गुड़िया बोली– ''मम्मी, मेरी गुड़िया!'' मम्मी और भाई जोर से हँसने लगे और बोले– ''तो क्या हुआ? गुड़िया ही तो है।''

पाठ–11

दशहरा का मेला

दीपू और दीपा दशहरा का मेला देख कर लौटे थे। उन्होंने मेले में मिठाई, जलेबी, समोसा और चाट खाई। दीपू ने छोटे भाई और बहन के लिए गट्टा, मूंगफली, नमकीन और टॉफी खरीदी। दीपा ने भी गुब्बारे, खिलौने, चश्मा और पतंग खरीदी।

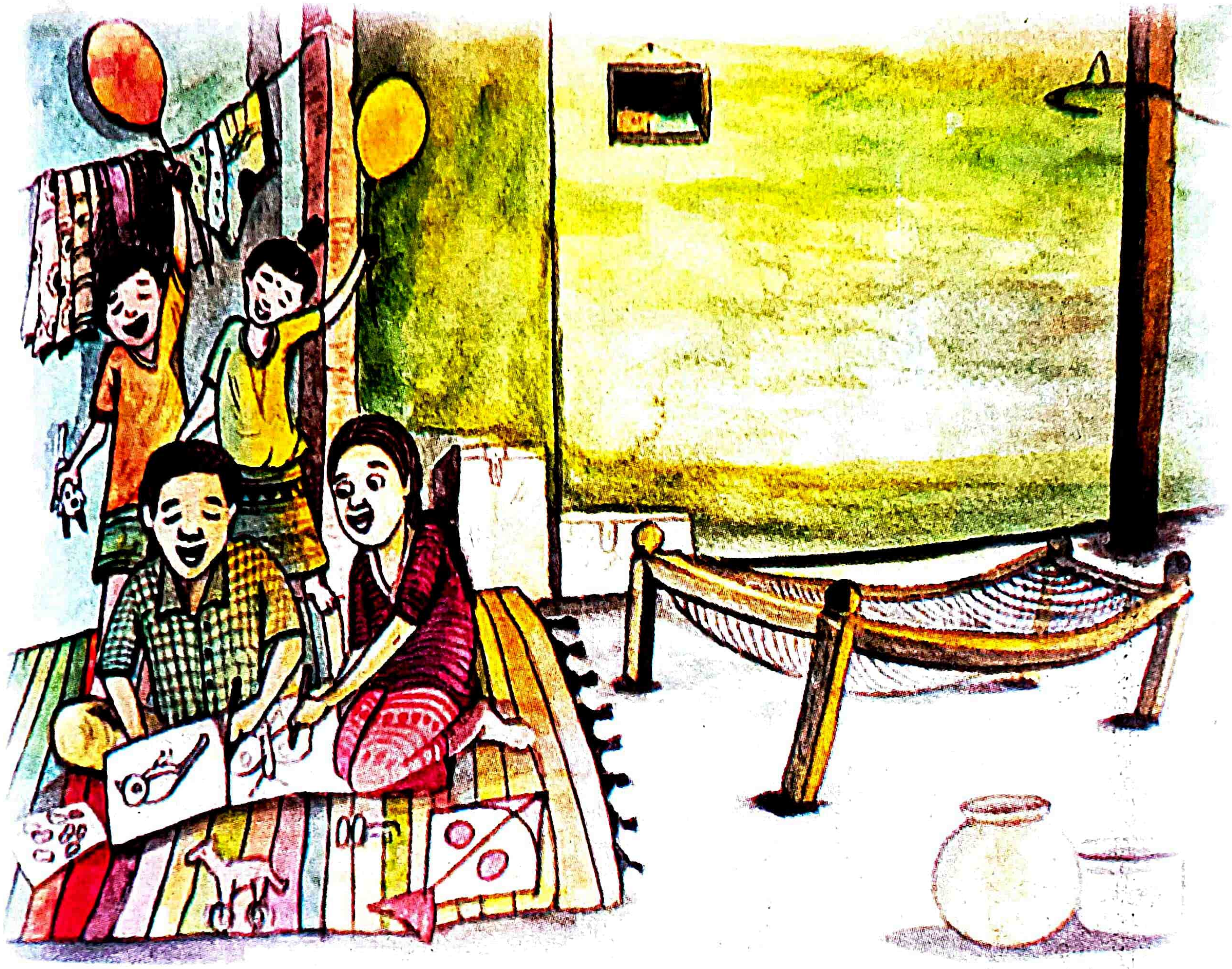

उन्होंने चित्र वाली किताब भी खरीदी और साथ में रंग भी खरीदे। फिर वो दोनों झूला झूले। अंत में उन्होंने रावण के पुतले को जलते हुए भी देखा। घर लौटते समय दीपा ने दीपू से पूछा- ''दशहरा का मेला क्यों लगता है?'' दीपू ने जवाब दिया- ''ताकि तू और मैं मिठाई, समोसे खा सकें और झूला झूल सकें।''

पाठ-12

बबलू हाथी

बबलू हाथी को तालाब में नहाना बहुत पसंद था। वह रोज तालाब पर नहाने जाता और खूब खेलता। एक दिन उसे वहाँ भोला मिला, जो दिखने में उसके जैसा ही था। बबलू ने भोला से तालाब में नहाने को कहा। भोला तैयार हो गया। दोनों ने तालाब में खूब मस्ती की। भोला की नाक पर एक सींग था, जो बबलू को चुभ जाता था।

घर जाने पर बबलू की माँ उससे पूछती कि– ''चोट कैसे लगी?'' तो वह कहता– ''भोला हाथी की वजह से लगी।'' बबलू की माँ ने भोला को एक दिन दोपहर के खाने पर बुलाया। बबलू की माँ भोला को देखकर बहुत हँसी और बबलू से कहा– ''यह तो गैंडा है, हाथी नहीं।''

पाठ-13

चिड़िया के बच्चे

एक चिड़िया अपने तीन बच्चों को उड़ना सिखा रही थी। तीनों बच्चे उड़ने से डर रहे थे। तभी चिड़िया ने एक पतंग कट कर आते देखी। उसे एक विचार आया। उसने अपने बच्चों से कहा- ''तुम इसकी डोरी पकड़ लो।'' तीनों बच्चों ने पतंग की डोरी पकड़ ली। सभी पतंग के साथ हवा में उड़ने लगे।

उड़ते हुए बच्चों को बहुत मजा आ रहा था। तब चिड़िया ने कहा- ''जब तुम खुद उड़ोगे तो तुम्हें और मजा आएगा।'' अब बच्चों का डर कुछ कम हो गया था। उन्होंने धीरे-धीरे अपने पंख फड़फड़ाए और डोरी छोड़कर उड़ने लगे। अब उन्हें पहले से ज्यादा मजा आने लगा। अब वे उड़ती पतंगों के साथ खुले आसमान में खेलने लगे।

भूरा की गेंद

एक किसान के पास बड़ा-सा खेत था। उसने इस साल खेत में आलू लगाए। ज़मीन से आलू खोदने का समय आ गया था। किसान कमजोर था और आलू जमीन से खोदना उसके बस में नहीं था। भूरा कुत्ता उसके खेत के बगल में रहता था। आज भूरे की गेंद खो गई। वह किसान के खेत में गेंद ढूंढने जा पहुँचा।

कोड नं०-25, अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा, सत्र 2020-21

भूरा ने किसान से पूछा कि मेरी गेंद कहाँ गई। उसने भूरा को देखा और कहा- "गेंद तो जमीन खा गई।" अब भूरा ने जमीन को खोदना शुरू कर दिया। जमीन से गोल गोल आलू निकलने लगे। उसने सारा खेत खोद दिया। मगर गेंद कहीं नहीं मिली। किसान ने चुपचाप गेंद निकाली और मेड़ पर रख दी। भूरा को गेंद मिल गई और किसान को खेत के आलू।

कोयल का घोंसला

एक कोयल ने पेड़ पर घोंसला बनाया। एक दिन उसने देखा कि घोंसले में एक कौआ आकर बैठ गया है। यह देखकर वह परेशान हो गई और अपने दोस्त कबूतर के पास पहुँची। दोनों ने मिलकर एक तरकीब सोची। वे दोनों घोंसले के पास वाली डाली पर बैठकर बातें करने लगे। कोयल बोली- ''आज खरगोश के यहाँ दावत में तो मजा ही आ गया। मैंने मन भर कर खाना खाया।''

कबूतर बोला– ''हाँ, बहुत ही स्वादिष्ट भोजन था। मैंने बड़े दिनों बाद इतना सारा खाना खाया।'' कोयल बोली– ''मुझे फिर से वही स्वादिष्ट हलवा खाने का मन कर रहा है।'' कौआ उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था। वह बोला– ''मुझे पता है, तुम मुझे भगाने के लिए झूठ बोल रहे हो। मैं तो बस आराम करने के लिए बैठा था और अब जा रहा हूँ।'' वह यह कहकर उड़ गया।

पाठ-16

मोर

क्या तुमने कभी मोर देखा है ? यह भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। मोर एक रंगीन पक्षी है जो देखने में बहुत सुन्दर होता है। मोर जब अपने पंख फैलाकर खड़ा होता है तब वह नजारा बहुत ही खुबसूरत होता है। मोर के लगभग 150 पंख होते हैं। बारिश के मौसम में मोर पंख फैलाकर नाचता है।

मोर समय आने पर अपने पंख खुद गिरा देता है। उन्हें तोड़ने की जरूरत ही नहीं पड़ती। मोर का पंख लोग घरों में भी रखते हैं। इनका उपयोग घर में सजावट के लिए करते हैं। मोर घास और कीड़े मकोड़े खाता है। यहाँ तक कि वो साँप और छिपकली भी खा सकता है। इसलिए बहुत से लोग छिपकली भगाने के लिए मोर का पंख घरों में लगाते हैं।

बताओ, मैं कौन?

गोल गोल आँखों वाला।
लंबे लंबे कानों वाला।
गाजर खूब खाने वाला।
इसका नाम बताओ लाला?

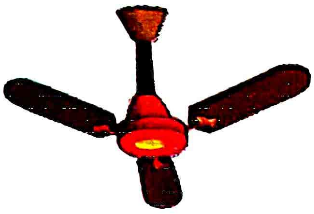

सबकी है ये नकल लगाते।
केला देख मचल ये जाते।
मौका देख झपट ले जाते।

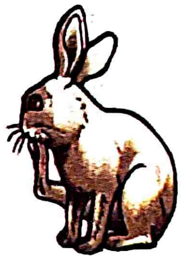

एक से बारह गिनती रहती है,
पैर नहीं फिर भी चलती है।

अगर नाक पर मैं चढ़ जाऊँ,
तो कान पकड़ कर खूब पढ़ाऊँ।

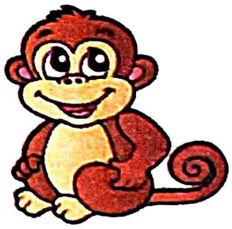

गोल गोल घूमता जाऊँ।
ठंडक देना मेरा काम।
गर्मी में आता हूँ काम।

हमने देखा ऐसा बंदर,
जो उछले पानी के अंदर।

कटोरे में कटोरा,
बेटा बाप से भी गोरा।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा–सीधा एक समान।

एक गुफा और बत्तीस चोर,
सारे रहते तीनों ओर,
बारह घंटे करें काम,
बाकी वक्त करें आराम।

लंबी टांगें, लंबी गर्दन,
लेकिन नहीं जिराफ।
बेढब डीलडौल में सचमुच,
समझ गए क्या आप?

फूल भी हूँ, फल भी हूँ,
और मिठाई भी।
तो बताओ, क्या हूँ मैं भाई।

सोने की वह चीज है,
बिके न हाट सुनार।
हल्की–फुल्की भी नहीं
कई किलो है भार।

दिन में सोए,
रात में रोए,
जितना रोए उतना खोए।

मैं मरूँ, मैं कटूँ,
तुम क्यों रोए?

एक किले में चोर बसे हैं,
सबका मुँह काला।
पूँछ पकड़ कर आग लगाई,
झट कर दिया, उजाला।

लाल डिबिया में हैं,
पीले खाने।
खानों में हैं,
मोती के दाने।

हाथ में हरा,
मुँह में लाल,
क्या हूँ मैं?
बताओ प्यारेलाल

उत्तर – दाँत, जहाज, अनार, प्याज, ऊँट, चारपाई, पान, मोमबत्ती, गुलाब जामुन, माचिस

इस अधूरी कहानी को आगे बढ़ाओ और अपने शिक्षक को सुनाओ-

रजनी विद्यालय से आ रही थी। रास्ते में काफी धूप थी। इसलिए वह छाता लगाकर आ रही थी। तभी तेज हवा चलने लगी और उसका छाता हाथ से छूट गया। छाता उड़कर एक पेड़ पर जा अटका। पेड़ बहुत ऊँचा था। वह सोचने लगी कि छाता कैसे उतारा जाए? रजनी की सहेली सरला भी वहाँ आ गई।...

(अब इस कहानी को पूरी करो)

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

सत्र 2020-2021

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद

निःशुल्क वितरण हेतु

आवरण पृष्ठ : अनुपम प्रकाशन, पंचवटी, मथुरा द्वारा मुद्रित